अबदुल्ला क़ख्ख़ार की “चोर” तथा प्रेमचंद की “होरी के जीवन का एक दिन”
कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन
"Chor" by Abdullah Kakhar and "A Day in the Life of Hori" by Premchand comparative study of stories

Pro. ulfat muhibova
Tashkent Government Oriental University,
Tashkent, Uzbekistan
प्रो. उल्फ़त मुहिबोवा
ताश्कंद सरकारी प्राच्य विद्या विश्वविद्यालय,
ताश्कंद, उज़्बेकिस्तान

Key words:
Hori, cow, to borrow, village, poverty, usurer, to be in debt,thief,sugar cane,realism, Kabul baba.

Abstract
Well-known 20th-century storytellers from Uzbekistan and India, Abdulla Kakhkhar and Premchand, lived at about the same time-early 20th century, and were writers who masterfully reflected the problems of their people in their stories. reading their stories Readers can identify and understand the public very deeply, closely. In their short stories, both the writers used to express the big problems of their time in such simple events, such simple language that after reading them, the characters of the story felt pity, sympathy, hatred towards those oppressors who persecuted the common people is born.

उज़्बेकिस्तान और भारत के 20वीं सदी के जाने माने कहानिकार अबदुल्ला क़ख्ख़ार तथा प्रेमचंद लगभग एक ही समय –20वीं सदी के शुरु में रहकर अपनी जनता की समस्याओं को अपनी कहानियों में माहिराना प्रतिबिंब करनेवाले लेखक थे। उनकी कहानियों को पढ़कर पाठक लोग जनता को बड़ी गहराई से, बड़ी क़रीब से पहचान और समझ सकते हैं। दोनों लेखक अपनी छोटी-छोटी कहानियों में अपने समय की बड़ी-बड़ी समस्याओं को ऐसे साधारण घटनाओं, ऐसी सरल भाषा में व्यक्त करते थे कि उनको पढ़कर मन में कहानी के उन पात्रों पर दया, हमदर्दी, आम लोगों को सतानेवाले उन ज़ालीमों के प्रति नफ़रत पैदा होता है।

अजीब की बात यह है कि अकसर अलग अलग देशों के लेखक अनजाने में एक दूसरे से काफी मिलनेवाली रचनाएं रच देती हैं। और उन में उठायी गयीं समस्याएं, उनके पात्र, पात्रों का रहन-सहन भी इतना मिलता है कि यदि दोनों रचनाओं को एक साथ पढ़ें तो लगता है कि एक ही जनता के एक ही समाज में रहनेवाले लोगों के बारे में लिखी गयी रचना लगती है। दोनों लेखक अपना क़लम आम जनता से संबंध किया, उनके बारे में लिखना, अपनी रचनाओं में उनकी रोज़ की ज़िंदगी की समस्याओं पर खास ध्यान देना उनकी कृतित्व का आधार था और इस लिये दोनों ने अपनी रचनाओं में साधारण लोगों की ज़िंदगी का वर्नण किया।

हिंदी साहित्य का विशेषज्ञ होने के नाते प्रेमचंद की कृतित्व पर काफ़ी जानकारी है। जब उनकी प्रसिद्ध गौदान उपंयास का कुछ भाग एक छोटी सी कहानी के रुप में पढ़ने को मिला तो मुझे तुरंत प्रसिद्ध उज्बेक कहानिकार अबदुल्ला क़ख्खार की "चोर" नामक छोटी सी कहानी याद आयी और इन दो कहानियों पर एक तुलनात्मक काम करने की इच्छा पैदा हुई। कहानियों को तुलना करने से पहले दोनों लेखकों के बारे में कुछ जानकारी देना ज़रुरी समझती हूं।

प्रसिद्ध उज़्बेक लेखक अब्दुल्ला क़ख्खार का जन्म सन् 1907 को कोकंद के पास एक छोटा सा गांव में एक लोहार के खानदान में हुआ था। पाठशाला खत्म करने के बाद कख्खार जी कोकंद के एक कालेज में पढ़ा। फिर मध्य एशिया विश्वविद्यालय में एम.ऐ. किया। पढ़ाई के बाद जवानों के संगठन में काम किया।

अब्दुल्ला क़ख्खार का साहित्यिक जीवन सन् 1924 से शुरु हुआ। अपना पहला काम उन्हों ने "मुश्तुम" नामक हास्यरस पत्रिका में शुरु किया, फिर नया "फ़रगाना", "लाल उज़्बेकिस्तान" नामक अखबारों में, "सोवियत साहित्य" नामक पत्रिका में भी काम किया। अखबारों में उन्हों ने अपनी पहली छोटी-छोटी कहानियां जैसे "चोर", "अंधे की खुली आंखें", "अनार", "बीमार", "शहर का पार्क", "डर", "साहित्य का उस्ताद", "क़ौमपरस्त", "मुहल्ला" आदि कहानियों को प्रकाशित करते रहे। बाद में उनके कई कहानी संग्रह जैसे "जवान होती दुनिया" (1933), "कहानियां"(1935), फिर अपने कई उपंयास - "दो चीनार", "कोशचीनार के चिंगारे", दूसरे विश्वयुद्ध के बारे में "दरदक का महावीर", "सोने का सितारा", युद्ध के बाद के गांव के लोगों की ज़िंदगी के बारे में "पक्षी" जैसे क़िस्से छपके आये। अब्दुल्ला कख्खार जी एक अच्छा नाटककार भी थे। उनके क़लम के "नयी ज़मीन पर", "बीमार दांत", "क़बर से आयी आवाज़","मेरी प्यारी बहनें" जैसे नाटक काफी मशहूर हैं।

अब्दुल्ला क़ख्खार जी बड़े अच्छे अनुवादक भी थे। उन्हों ने रुस के मशहूर रचनाएं जैसे पुश्किन की "कप्तन की बेटी", गोगल की "शादी", "निरीक्षक", टालस्टाय का "युद्ध और शांति", गोर्कीय का "मेरे विश्वविद्यालय" तथा चेखोव, शागिनिन, सेराफिमोविच जैसे लेखकों की रचनाओं का रूसी से उज़्बेक में तरजुमा किया। साथ-साथ लेखक होने की इच्छा में काम करनेवाले जवान पीढ़ियों के साथ काम करने से, उनको लिखने के रहस्यों को समझाने, उनके साथ सुबह से शाम तक काम करने से कभी नहीं थकते थे।

उज़्बेकिस्तान के सामाजिक जीवन की तरक़्क़ी में भी उनका बड़ा योगदान रहा। क्योंकि अब्दुल्ला कख्खार जी ने उस समय काफी ऊंचे पदों में काम किया था। सन् 1954—1956 सालों में उज़्बेकिस्तान के पारलमेंट का अध्यक्ष रहे। उसके बाद उनको लोक सभा में चुना गया था। सन् 1968 को 61 वर्ष की उम्र में उनका इंतक़ाल हुआ।

उज़्बेक लोगों की सामाजिक और अध्यात्मिक जीवन को सुधारने में बड़े योगदान के लिये सरकार की तरफ़ से अब्दुल्ला क़ख्खार जी का पांच बार सम्मानित किया गया। उनका नाम अमर करने के लिये उज़्बेकिस्तान की सड़कों, मुहल्लों, पार्कों तथा स्कूलों को उनका नाम दिया गया है। लेखकों के बाग़ में उनकी मूर्ती भी स्थापित की गयी है।

प्रेमचंद जी भारत के जाने-माने लेखक, कहानिकार थे। हमें लगता है कि आज तक भारत में गांव के विषय को किसी भी लेखक ने प्रेमचंद जी के स्तर तक पहुंचाकर अपनी रचनाओं में प्रतिबिंब नहीं किया। गांवों में भारतीय लोगों का मुख्य भाग रहता है इस लिये देश में मुख्य सामाजिक समस्याएं गांव के लोगों की समस्याएं हैं। जहां तक मुझे लगता है कि अगर भारत को समझना चाहते हो तो गांव को पहचानो, गांव के लोगों की ज़िंदगी सीखो, गांव के लोगों के साथ बात करो, गांव के बारे में रचनाएं पढ़ो। इसका मतलब प्रेमचंद जी को पढ़ो।

प्रेमचंद जी उत्तर प्रदेश के वाराणसी के पास लम्ही नामक गांव में सन् 1880 को पैदा हुए थे। वे 56 साल के उम्र में सन् 1936 को गुज़रे। वे अध्यापक, लेखक, पत्रकार थे।

प्रेमचंद जी के तेरह उपन्यासों में से छ उपन्यासों - गोदान, सेवासदन, निर्मला, कर्मभूमि, ग़बन - का तरजुमा उज़बेक ज़ुबान में हो चुका है। उनकी ठाकुर का कुआँ, घर जमाई, बड़े भाई साहब, नशा, बेटों वाली विधवा, ईदगाह, शिकार, गुल्ली-डंडा, ज्योति, दिल की रानी, आखिरी हीला, तावा, घासवाली आदि कहानियों पर हमारे विद्यार्थीगण बी.ऐ तथा एम.ऐ के डिग्री के लिये थिसिस भी लिखे हैं और काफी कहानियों का उज़्बेक में अनुवाद भी हुआ है।

हमारे यूनिवर्सिटी के अनुवादकला विभाग का अध्यक्ष निलुफ़र खोदजयेवा ने पिछले साल प्रेमचंद की रचनाओं के (उपन्यास,कहानियां) उज्बेकी जुबान में अनुवाद पर पी.एच. डी किया है।

उज़ुबेकिस्तान और भारत के दो लेखक –अब्दुल्ला क़ख्खार जी और प्रेमचंद जी के बारे में छोटी सी जनकारी से पता चलता है कि दोनों लेखक लगभग एक ज़माने के रहनेवाले थे, दोनों ने उपंयास और कहानियां लिखीं है, दोनों की रचनाओं का मुख्य पात्र आम जनता, विशेषकर गांव के लोग थे।

इसका एक मिसाल नीचे तुलनात्मक अध्ययन के लिये चुनी गयी अब्दुल्ला क़ख्खार जी की “चोर” और प्रेमचंद जी के “होरी के जीवन का एक दिन” नामक कहानियां हैं जो एक ही मसले पर - गांव के लोगों के गाय से संबंध ज़िंदगी का एक झलक के माध्यम से वहां के गरीब लोगों की ज़िंदगी में गाय का महत्व दिखाया गया है।

उज़बेक और भारतीय - दोनों लेखकों की इन कहानियों में गांव के लोगों की ज़िंदगी में गाय का महत्व कहां तक है इस पर ज़ोर दिया गया है। अब्दुल्ला क़ख्खार जी

की "चोर" नामक कहानी काबुल बाबा के घर से रात के अंधेरे में गाय के खो जाने से शुरु होता है और प्रेमचंद जी की "होरी के जीवन का एक दिन" नामक कहानी जब से होरी के घर में गाय आ गयी तो घर की श्री कुछ और हो जाने के बारे में लिखने से शुरु होती है। एक कहानी में घर में गाय आने की खबर है, दूसरी में गाय खो जाने की खबर। पर लेखक अपनी रचनाओं में घटनाओं को आगे पीछे कर बयान कर सकता है, पर अपनी मुख्य बात – यहां पर गाय का महत्व – से दूर नहीं जाता है। दोनों कहानियों में सारी घटनाएं एक जैसी नहीं हैं, लेकिन उनका मसला एक जैसा है, गाय के बारे में विचार एक जैसा है, पात्रों का जीवन स्तर, स्थिति एक जैसे हैं। कहानियों में ग़रीबी और गांव के लोगों की समस्याओं को हल करनेवाले, गांव के लोगों के जीवन का "देख-भाल" करनेवाले पंचायत, महाजन लोगों की दूराचारी, अनेतिकता दोनों कहानियों में लगभग एक जैसा दिखाया गया है। नीचे इन सब विचारों को कहानियों से लिये गये उदाहारणों के साथ बयान करने की कोशिश करेंगे।

दोनों कहानियों में गाय से संबंध संकट - एक कहानी में गाय का खो जाना, दूसरे में गाय का मर जाने का वर्णन इस तरह किया गया।

अब्दुल्ला क़ख्खार जी की "चोर" **में,**

"बुढ़िया जब रात के अंधेरे में आटा सेंकने उठी तो गाय को देखने भी गयी। अरे, गाय नहीं है, पीछे की दीवार में छेद पैदा हुआ है।"[1]

प्रेमचंद जी "होरी के जीवन का एक दिन"में,

"सहसा गोबर आकर घबराई हुई आवाज़ में बोला – दादा सुन्दरिया को क्या हो गया, क्या काले नाग ने छू लिया – वह तो बड़ी तड़प रही है। होरी चौक में जा चुक था। थाली सामने छोड़कर बाहर निकल आया और बोला - क्या असगुन मुंह से निकलते हो। अभी तो मैं ने देखा था। लेटी धी।"[2]

इन दो पर्चों से पता चलता है कि दोनों खानदान में गाय से, जो घर का सब से बड़ा धन माना जाता है, संबंध कुछ बुरी बात हुई है।

दोनों लेखकों ने कहानियों में गरीब के परिवार में जीवन गुज़ारने के लिये गाय का महत्व कितना बड़ा है यह बड़ी स्पषटता से व्यकत किया,

अब्दुल्ला क़ख्खार जी की "चोर" में**,**

"किसान का घर जल जाये पर गाय न जाए। एक थैला टिंका, दस-पंद्रह लकड़ी, एक रथ गन्ना हो तो घर तैय्यार, पर गाय खरीदने के लिये पता नहीं कितने समय तक बर्तन पानी डालके रखना पड़ता है"[3]

एक और मिसाल,

"मैं बता रहा हूं तू रो मत, तुम्हारी गाय यदि बादशाह के सीमा से बाहर नहीं गयी तो ज़रुर मिल जायेगी"[4]

प्रेमचंद जी की "होरी के जीवन का एक दिन" में,

---

[1]Abdulla Kaxxar, O'gri (Chor), P.5
[2]प्रेमचंद, होरी के जीवन का एक दिन, पृ.3-4.
[3]Abdulla Kaxxar, O'gri (Chor), P.5
[4]Abdulla Kaxxar, O'gri (Chor), P.6

"लेकिन घर आकर उसने (होरी) ज्यों ही वह प्रस्ताव किया कि कुहराम मच गया। धनिया तो कम चिल्लाई, दोनों लड़ियों ने तो दुनिया सिर पर उठा लीं। नहीं देते अपनी गाय,रुपये जहां से चाहो लाओ।"

यहां पर अब्दुल्ला क़ख्खार जी ने किसान का धर जल जाये पर गाय न जाए जुमले से गाय के महत्व को साफं-साफं कह दिया। प्रेमचंद जी गाय बेचने की बात सुनकर बीवी की, बच्चों की हालत लिखकर गाय का महत्व को अच्छी तगह समझा दिया।

दोनों कहानियों में गांव के पंचायत के लोगों की बेईमानी भी बड़ी अच्छी तरह से दिखायी गयी है

अबदुल्ला क़ख्खार जी की "चोर" में पंचायतवाले के पास जब काबुल बाबा गये तो आपस में इस तरह की बातचीत हुई,

-क्या, गाय खो गयी?

-गाय नहीं भैंस था

-खोने से पहले था न, कैसा भैंस था?

-बहुत अच्छा भैंस था।

- अच्छा भैंस होता तो अनजानों के साथ चला जाता? उसे बोला नहीं गया था कि हर किसी के साथ जाया मत करो।"[5]

उनकी बातचीत से पता चलता है कि पंचायतवाला समस्या सुलझाने से दूर है। प्रेमचंद जी की "होरी के जीवन का एक दिन" महाजन द्वारा इस समस्सा का वर्णन हुआ,

"गांव में सब से बड़े महाजन थे झिंगुरी सिंह। होरी ने झिंगुरी सिंह के पास जाने का फैसला किया। झिंगुरी सिंह ने जब से उसके द्वार पर गाय देखी, उस पर दांत लगाये हुए थे। ... मन में सोच लिया धा, होरी को किसी अरदब में डालकर गाय को उड़ा लेना चाहिये।"

कहानियों से लिये गये इन पर्चों से देखा जा सकता है कहानियों के पात्र उज़बेक हो या भारतीय हो, घटना कैसी भी हो ग़रीबों को लूटना महाजनों, पंचायतवालों का मुख्य काम है।

दोनों कहानियों में गांववालों का एक दूसरे का समर्थन देना, कठिनाई में एक दूसरे को हाथ फैलाना गाय की घटना द्वारा दिखाया गया। दोनों कहानियों में गाय से संबंध संकट पूरे गांववालों के लिये बड़ी संकट की बात बन जाती है,

अबदुल्ला क़ख्खार जी की "चोर" **में,**

"बुढ़िया की आवाज़ से लोग जल्दी इकट्ठे हो गये। काबुल बाबा बिना टोपी, बिना चप्पल, बिना कुर्ते बाहर गाय खोयी कमरे के पास कांपते हुए इधर-उधर देख रहे थे पर कुछ दिखता नहीं था। औरतों की चोर को गालियां देने की, कुत्तों के भोंकने की और मुर्ग़ियों की कु-कु जैसी आवाज़ें आ रही थीं।"

प्रेमचंद जी "होरी के जीवन का एक दिन" इसका वर्णन इस तरह है,

[5]Abdulla Kaxxar, O'gri (Chor), P.7

"धनिया सिर पीटने लगी। होरी पंडित दातादीन के पास दौड़ा। सारा गांव जमा हो गया। गाय को किसी ने कुछ खिला दिया। साफ़ विष दिया गया है।"[6]

गाय की घटना से दोनों लेखकों ने अपनी दूसरी मुख्य बात –पंचायतवालों, महाजनों का असलियत दिखाना चाहा, उनका सख़्त आलोचना किया। गरीब को हमदर्दी की जगह ये स्वार्थी लोग इससे क्या लाभ उठाने के बारे में सोचते हैं। प्रेमचंद जी की कहानी में जैसे झिंगुरी सिंह होरी की गाय को अपनाने की कोशिश में रहता है उसी तरह अब्दुल्ला क़ख्खार जी की कहानी में खोयी हुई गाय पर पंचायत के लोग, गाय मिले न मिले, उस ग़रीब से पैसे कमाने में लगे रहते हैं।

अबदुल्ला क़ख्खार जी की "चोर" में इसका इस तरह बयान किया गया,

"काबुल बाबा ने सोचा, पंचायतवाले गाय को ला देने की बात की। अब मुफ़त में यह लोग काम करते नहीं। फिर जेब में जितने पैसे थे सारा उसी को दे दिया। उसने पंचायत के बड़े अमीन को बुरी पहंचाने का वादा कर चला गया। ... हफ़ते बाद काबुल बाबा पंचायत गये और गाय के बारे में पूछा। वहां बैठे अमीन साहब ने एसाजवाब दिया - शायद गाय अपने आप वापस आ जायेगी, क्यूं रो रहे हो, रोना मत। यदि इसे हम ढूंढवायेंगे तो दक्षिणा में हमें क्या मिलेगा...काबुल बाबा घर से तीन मुर्गी लिया, दोस्तो और पड़ोसों से सौ अंडे मिले। ये सब उसने पंचायतवालों को दे दिया। उन्हों ने काबुल बाबा को फिर दूसरी जगह भेजा, पर अंत में गाय मिली ही नहीं"।[7]

नतीजा यह हुआ कि अंत में काबुल बाबा को रोने से रोकने के लिये तथा उसे फिर क़र्ज़ में बिठाने के लिये अमीन साहब ने काबुल बाबा को अपने ससुर के घर ले चला। वहां उसका ससुर काबुल बाबा को दो गाय दे दिया, पर एक छोटा सा शर्त लगाया। यह शर्त शरद को, फसल काटते समय पत चलेगा... । कहानी यहीं पर खत्म होती है। आगे पाठक अपने आप समझ लेगा कि किसान के फसल का मुख्य भाग गाय देनेवाले को दिया जायेगा।

प्रेमचंद जी "होरी के जीवन का एक दिन" में इसी तरह का धटना महाजन द्वारा दिखाया गया,

"झिंगुरी सिंह ने सहानुभूति का रंग मुंह पर पोतकर कहा– तो एक बात कहो, यह नयी गाय जो लाये हो, इसे हमरे हाथ बैच दो। सूद, इसटाम सब झगड़ों से बच आओ, चार आदमी जो दाम कहें, वह हम से ले लो।"

पर अंत में यह हुआ कि गाय न होरी का रहा और न झिंगुरू सिंह का, किसी के कुछ खिलाने से गाय मर गयी।

अब्दुल्ला क़ख्खार जी और प्रेमचंद जी ने अपनी इस कहानी में दो मुख्य बातें रखीं – पहला गाय की समस्या, दूसरा इस द्वारा उस ज़माने के पंचायतों, महजनों का सख्त आलोचना करना। और दोनों लेखकों ने इस में एक जैसा सफल रहे। दोनों कहानियां अपने पाठकों के लिये बड़ी प्यारी कहानियां है, दोनों के पात्र एक जैसे हैं, दोनों की घटनाएं बहुत मिलती जुलती हैं। पर यह दोनों कहानियां 20वीं सदी के शुरु के गांव के लोगों के जीवन के बारे में हैं। एक यथार्तवाद लेखक के रुप में दोनों लेखकों ने उस ज़माने की हिसाब से सही बातें लिखी हैं। पर अब 21वीं सदी है, उन घटनाओं के बाद

---

[6]प्रेमचंद, होरी के जीवन का एक दिन, पृ.4.

[7]Abdulla Kaxxar, O'gri (Chor), P.7-8

सौ साल गुज़र चुका है। इस लिये उज़बेक कहानी में लिखी गयी घटनाएं आजकल के गांवों में बिलकुल नहीं मिल सकता। कंयोंकि यहां के गांव काफी तरक्की कर चुके हैं, पहले जैसे अनपढ़ लोग अब नहीं है। आजकल उज़्बेकिस्तान में गांव और शहर में इतना बड़ा फर्क नहीं है। आशा है कि भारत में भी ऐसा ही होगा।

मुझे उम्मीद है कि इस लेख को पढ़ने के बाद पाठक यह समझ सकता हैं कि इंसान हर जगह एक जैसा सोचता है, हर एक देश के गांव या शहर की समस्याएं एक दूसरे से ज़रुर मिलते हैं, उनका सिर्फ शकल अलग हो सकता है पर भाव अकसर एक जैसा होता है। हर एक देश का लोक साहित्य, लोक कथाएं इसका एक सब से अच्छा उदाहरण बन सकता है।

सहायक किताबों की सूची

1. अबदुल्ला क़ख्खार. नोर. ताश्कंद, 2012
2. प्रेमचंद. होरी के जीवन का एक दिन। दिल्ली, 1936

Refrences

1. Abdullah Kakhar. Nore. Tashkent, 2012
2. Premchand. A day in the life of Hori. Delhi, 1936